गुरु नानक – सबद २६

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥
अंतु न करणै देणि न अंतु ॥
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥
अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥
अंतु न जापै कीता आकारु ॥
अंतु न जापै पारावारु ॥
अंत कारणि केते बिललाहि ॥
ता के अंत न पाए जाहि ॥
एहु अंतु न जाणै कोइ ॥
बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥
ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ ॥
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥
जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥
नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

सार: अनजाने में, हममें असीम की खोज करने की सहज इच्छा होती है। जिस सच की हम तलाश कर रहे हैं वह असीमित है, लेकिन हमारी संवेदनाएँ सीमित हैं। वो चीज़ों को केवल तभी समझ सकती हैं जब कोई संदर्भ हो; जैसे गर्म और ठंडा, नर और मादा, दिन और रात, इत्यादि। दोहरेपन से सीमित, अज्ञानी अनजान मन वह खोजता है जो भीतर और बाहर हर जगह मौजूद है।

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥

महिमामंडन का कोई अंत नहीं है और व्यक्त करने का कोई अंत नहीं है।

अंतु न करणै देणि न अंतु ॥
कर्मों का कोई अंत नहीं है और दान देने का कोई अंत नहीं है।

अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥
धारणाओं का कोई अंत नहीं है और आत्मसात करने का कोई अंत नहीं है।

अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥
मन जिसे उपदेश मान लेता है, उसके जप का कोई अंत नहीं है।

अंतु न जापै कीता आकारु ॥
रचनाकार की कृतियों के बारे में मंत्र पढ़ने का कोई अंत नहीं है।

अंतु न जापै पारावारु ॥
असीम की सीमा का जप करने की कोई अंतिम सीमा नहीं है।

अंत कारणि केते बिललाहि ॥
कई लोग असीमता के अंत को समझने की कोशिश करते हैं।

ता के अंत न पाए जाहि ॥
इसकी सीमा ज्ञात नहीं की जा सकती।

एहु अंतु न जाणै कोइ ॥
सर्वव्यापी अदृश्य जागरूकता की असीमता के बारे में कोई नहीं जानता।

बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
जितना अधिक कोई असीमता के बारे में कहता है, उतना ही अधिक जानने को मिलता है।

वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥

नेक लोग उच्च आध्यात्मिकता की स्थिति में रहते हैं।

ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥

मानवता की उच्चतम स्थिति चिंतन के माध्यम से आयोजित किया जाता है।

एवडु ऊचा होवै कोइ ॥

ऐसे चिंतन करने वाले, सदाचारी लोग दुर्लभ हैं।

तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥

केवल वह ही सदाचारी होने की उत्कृष्ट स्थिति से परिचित हैं।

जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥

वह स्वयं के प्रति और अपने गुणों की महानता के प्रति जागरूक हैं।

नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

नानक कहते हैं कि ऐसा दृष्टिकोण उनके करमों के आशीर्वाद के रूप में प्राप्त होता है। (२४)

तत्त्व: गुरु नानक का मानना है कि आध्यात्मिक ज्ञान असीमता को स्वीकार करने से आता है। अस्तित्व स्वयं को विविध रूपों में प्रस्तुत करता है, फिर भी यह असीमित चेतना का सीमित दायरा बना रहता है। हमारी शारीरिक पहचान और अहंकार हमें सीमित महसूस कराते हैं, लेकिन चिंतन हमें अपनी असीमता का एहसास कराने के लिए अपने जन्मजात गुणों से दोबारा जोड़ता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com